॥ ॐ ॥ **श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नमः** ॥ 卐 ॥

स्वस्ति श्रीमन्नृप शालिवाहन शक 1948

पराभव नाम संवत्सर

दीपावली साधनाएँ - 2026







हार्दिक शुभकामनाओं के साथ . . . .

श्री निखिल चेतना केन्द्र पुलिमामिडी, हैदराबाद (तेलंगाणा)

॥ ॐ ॥ **श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नमः** ॥ 卐 ॥

दीपावली साधनाएँ - 2026

प्रिय साधक बन्धू / भगिनिओं . . . .

श्री निखिल चेतना केन्द्र हैदराबाद की ओर से दीपावली की विशेष साधनाएँ दी जा रही है।

दीपावली की शुभकामनाएँ एवं धन, ऐश्वर्य, समृद्धी की प्राप्ति के लिए साधनात्मक आशिर्वाद . . . .

परम पुज्यनिय सद्गुरुदेव स्वामी श्री निखिलेश्वरानन्द जी की असीम कृपा तले साधनाओं की परंपरा को लेकर आगे बढ़ रहे हम सब साधक इस बार दीपावली मे लक्ष्मी प्राप्ति संबंधित विशेष साबर साधनाएँ सम्पन्न करेंगे।

होली की रात्री, शिवरात्री, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं दीपावली की रात्रियों को तांत्रोक्त सिद्धी रात्री कहा गया है।

मै इस बार धनत्रयोदशी से लेकर यम द्वितीया तक की पाँच दिनों की साधनाएँ दे रहा हूँ।

सभी साधक साधना सम्पन्न करे एवं अनुभव करे की आप सफलता की ओर अग्रसर है तो, मुझे मेरे इस प्रयास का सफल अनुभव होगा, प्रसन्नता होगी।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ . . . .

आपका अपना गुरुभाई

डॉ. अनिलकुमार जोशी

॥ ॐ ॥ श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नमः ॥ 卐 ॥

दीपावली पर्व के पाँच दिन

दि.05.11.2026 से दि.09.11.2026 तक है।

1) दि.05.11.2026 - i) रमा एकादशी युक्त द्वादशी है। अश्विन कृष्ण पक्ष एकादशी को रमा एकादशी कहा गया है। इस दिन भगवान् जगन्नाथ या श्रीकृष्ण भगवान् को पंचामृत से अभिषेक कर मक्खन का नैवद्य समर्पित करे। तुलसी मंजरी, दवना, मोगरा फुलों से अष्टोत्तर नामार्चन करे। इस से सौंदर्य प्राप्ती एवं ऐश्वर्य प्राप्ती संभव है।

ii) सायंकाल मे बछडे युक्त गाय का पुजन करे। वस्त्र अर्पित करे। चने और गुड़ का नैवद्य खिलाये। कामधेनु गायत्री मंत्र का एक सौ आठ (108) बार जप पुष्पार्चन से करे।

कामधेनु गायत्री -

"ॐ सुरभ्यै च विद्महे गायत्र्यै च धिम ही तन्नो कामधेनु प्रचोदयात्"

2) दि.06.11.2026, गुरु द्वादशी, धन त्रयोदशी - अश्विन कृष्ण द्वादशी को गुरु द्वादशी कहते है। इस दिन गुरु पादुका, गुरु मुर्ति या गुरु यंत्र का पंचोपचार पुजन कर गुरोपनिषद् का पाठ करे।

महर्षि वेदव्यास जी ने गुरोपनिषद् की रचना इसी दिन की थी, ऐसा शास्त्रकार कहते है।

गुरु ध्यान -

हंसाभ्या परिवृत्त पत्रकमलै र्दिव्यैर्जगत्कारणै: ,
विश्वोत्कीर्ण मनेकदेह निलयैः स्वच्छं दमात्मेच्छ्या ।
तत्त योग्य तथा स्वदेशिक तनुं भावैक दीपांकुरं,
प्रत्यक्षाक्षर विग्रहं गुरु पदं ध्यायेद् द्विबाहुं गुरुम् ॥

मंत्र - " ॐ नमः श्री गुरुवे देवाय परम पुरुषाय सर्व देवता वशीकराय सर्वारिष्ट विनाशाय सर्व मंत्र छेदनाय त्रैलोक्यं वशमानय ॐ गुँ रुं ॐ ॐ ॐ स्वाहा "

इस मंत्र की पाँच (5) माला स्फटिक माला से जप कर गुरु आरती संपन्न करे। गुरुकृपा प्राप्त होगी, सर्व देवी देवता वशीकरण होगा।

दक्षिणावर्ति शंख कल्प प्रयोग - प्रथम पूजा स्थान मे लक्ष्मी-गणपति यंत्र /विग्रह की स्थापना कर उसका संक्षिप्त पूजन कर मै यह पाँच दिन मे जो भी साधनायें करुँगा, हे देवाधिदेव गणपति भगवान् वे निर्विघ्नता से पूर्ण हो ऐसी प्रार्थना करे। फिर गुरु यंत्र/ विग्रह/ पादुका स्थापित कर उसका संक्षिप्त पूजन करे। गुरुजी से साधना आशिर्वाद प्राप्त करने लिये ग्यारह (11) माला गुरु मंत्र जप करे।

इसके बाद चौकी पर दक्षिणावर्ती शंख की स्थापना निम्न प्रकार से करे। प्रातः काल स्नानादि से निवृत होकर शुद्ध सफेद वस्त्र धारण करे और पहले से ही अगरबत्ती, घी का दीपक, कुंकुम, अक्षत, चाँदि का वर्क (जैसे मिठाई पर वर्क लगाते है) लगावे और शंख पर केसर से " **श्रीं** " अक्षर लिखे फिर शंख का निम्न मंत्र से पूजन करे।

मंत्र - " ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीधर करस्याय पयोनिधि जाताय श्री दक्षिणावर्त शंखाय ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीकराय पूज्याय नमः "

शंख पर कुंकुम, चावल, इत्र आदि इसी मंत्र से चढ़ावे। फिर शंख को चांदी या तांबे के बर्तन मे स्थापित करे। सामने दूध से बना हुआ प्रसाद भोग के रुप मे लगाये, सुगंधित श्वेत पुष्प चढ़ाये और कर्पूर से आरती करे। इसके बाद दोनों हाथ जोडकर दक्षिणावर्ति शंख का ध्यान करे।

ध्यान -

" ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं श्री दक्षिणावर्त शंखाय भगवते विश्व रुपाय सर्व योगीश्वराय त्रैलोक्यनाथाय सर्वकामप्रदाय सर्व ऋद्धि समृद्धि वांछितार्थ सिद्धिदाय नमः ॐ सर्वाभरण भूषिताय प्रशस्यां गोपान्ग संयुताय कल्प वृक्षाध: स्थिताय कामधेनु चिन्तामणि नव निधि रुपाय चतुर्दश रत्न परिवृत्ताय महासिद्धि सहिताय लक्ष्मी देवता युताय कृष्ण देवताकर ललिताय श्री शंख महानिधये नमः"

इसके बाद हकीक या स्फटिक माला से पाँच (5) माला निम्न मंत्र जप करे।

मूलमंत्र -

"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं दक्षिणमुखाय शंखनिधये समुद्र प्रभावय नमः"

फिर इस शंख को दीपावली तक अपने पूजा स्थान मे ही रहने दे, बाद मे उसे लाल कपडे मे लपेट कर तिजोरी मे रख दे, तो उसके जीवन मे निरन्तर व्यापारिक उन्नती होती रहती है और किसीभी प्रकार का अभाव नही रहता।

सायंकाल धनत्रयोदशी होने के कारण दक्षिणावर्त शंख यंत्र की पुजा, कुबेर पुजन, स्वर्ण सिक्के का पुजन करे।

धनदा यक्षिणी साधना -

विधान - धनत्रयोदशी के दिन साधक पीले वस्त्र धारण कर, ताम्रपत्र पर पंद्रहीया (15) का यंत्र उत्कीर्ण करे। एक पात्र मे यंत्र रखकर, चारों ओर तेहतीस (33) तेल के दीपक लगाएं। पीले अक्षत से निम्न मंत्र बोलते हुए एक सौ आठ (108) बार यंत्र के ऊपर चढ़ाएं।

मंत्र -

" ॐ महालक्ष्मी आगच्छ आगच्छ धनप्रदाय नमः "

८	१	६
३	५	७
४	९	२

निम्न मंत्र का कमलगट्टे की माला से विशेष धनदा यक्षिणी मंत्र का तीस (30) माला जप करे एवं धनदा स्तोत्र का ग्यारह (11) बार पाठ करे।

मंत्र - " ॐ ऐं ऐं श्रीं श्रीं लक्ष्मी आगच्छ आगच्छ ह्रीं ह्रीं नमः "

दीपावली त्योहार समाप्त होने के बाद उस तांबे के यंत्र को नए पर्स मे एक साल तक रखने से धन की कमी नही होगी। साथ मे सियारसिंगी को एक डीब्बी मे रखकर सिन्दुर से पुजन करे। इन सभी वस्तुओं को एक चौकी पर रखकर लक्ष्मी पुजन तक वैसे ही रहने दे।

दि.07.11.2026 - को सभी उपरोक्त सामग्री का पुजन करे। सोलह (16) दीपक इन्ही सामग्री के सामने प्रज्ज्वलीत करे। हो सके तो **पद्मावती स्तोत्र** का एवं **श्रीसुक्त** का सोलह (16) बार पाठ करे एवं साध्य हो तो कमलगट्टे से एक हजार (1000) बार **" श्रीं स्वाहा "** से हवन करे।

****

दि.08.11.2026, नरक चतुर्दशी, अमावस्या, **दीपावली उत्सव**, **लक्ष्मी-कुबेर पुजन -** प्रातः अभ्यंग स्नान, यम तर्पण सम्पन्न करे।

प्रातः सुर्योदय से पहले अभ्यंग स्नान करे। प्रातः काल चांवल और तिल को स्नान के समय अपने मस्तक पर घुमाना चाहिये। इससे नरक के भय का नाश होता है। उस समय निम्न प्रकार से प्रार्थना करे।

मंत्र - " सीता लोप सहयुक्त सकण्टक दलान्वित।
हर पापमपामार्ग: भ्राम्यमाणः पुनः पुनः "

बाद मे दोपहर 11:00 AM से 12:00 PM के बीच मे यम तर्पण करे। जिन्हे पिता है वे, अक्षत युक्त जल से, जिन्हे पिता नही है वे, तिल युक्त जल से निम्न मंत्र धर्मराज जी के नामों से तर्पण करे। जैसे . . . .

1) यमं तर्पयामि, 2) धर्मराजं तर्पयामि, 3) मृत्युं तर्पयामि,
4) अंतंकं तर्पयामि, 5) वैवस्वतं तर्पयामि, 6) कालं तर्पयामि,
7) सर्वभूत क्षयकरं तर्पयामि, 8) औदुंबरं तर्पयामि, 9) दध्नं तर्पयामि,
10) नीलं तर्पयामि, 11) परमेष्ठीणं तर्पयामि, 12) वृकोदरं तर्पयामि,
13) चित्रं तर्पयामि, 14) चित्रगुप्तं तर्पयामि।

यम तर्पण के बाद दक्षिण दिशा की ओर मुख कर निम्न श्लोक को दस (10) बार उच्चारण करे।

श्लोक - **" यमो निहंतां पितृ धर्मराजो वैवस्वतो दंडधरश्च कालः।**
भूताधिपो दत्त कृतानुसारी कृतांत एतद्दशभि र्जपंती "

लक्ष्मी पुजन का मुहुर्त - 05:50 PM से 10:50 PM तक है।

मुहुर्त के अनुसार श्री महालक्ष्मी पुजन संपन्न करे।

लक्ष्मी-कुबेर पुजन का विवरण अलग से दिया गया है।

दि.08.11.2026, आदिलक्ष्मी साधना - इस दिन रात्री बारह 12:00 बजे निम्न ध्यान बोलकर निम्न मंत्र का एक हजार (1000) जप करे। घर मे लक्ष्मी देवी का स्थिर वास होगा।

ध्यान - मरकतांगीं महालक्ष्मीं सर्व देवादि पुजितां,
पद्महस्तां त्रिनयनां देवीं कामेश्वरीं भजे ॥

मंत्र - **" ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः आदिलक्ष्मी श्री कामेश्वर्यै नमः "**

इस मंत्र को नई साडी, पिताम्बरी और पिताम्बर पहनकर ही करे। मखाणों का नैवद्य बताकर ग्रहण करे। साथ मे बादाम युक्त दुध पिये।

****

दि.09.11.2026, आकस्मिक धन प्राप्ती साधना - इस दिन सोमवती अमावस्या है। पारद शिवलींग एवं पारद लक्ष्मी का दिन या रात्री मे कभी भी पुजन कर निम्न मंत्र का एक हजार (1000) बार मंत्र जप करे। वर्षभर मे कभी भी आकस्मिक धन प्राप्ती होगी।

मंत्र - **" ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवनपालीन्यै महालक्ष्मी अस्माकं दारिद्र्यं नाशय नाशय प्रचुरं धनं मे देहि देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ "**

हो सके तो पंचमेवा, शक्कर, गाय का घृत, चंदन, अगर, तगर, जटामांसी और खसखस को एकत्रित कर एक सौ आठ (108) बार मंत्र जप करते हुये हवन करे। साधक इस साधना मे नुतन रेशमी वस्त्र पहने। आकस्मिक धन प्राप्ती होगी।

****

दि.10.11.2026, बलि प्रतिपदा, व्यापार मुहुर्त, गोवर्धन पुजा - आज के दिन सुबह 02:10 AM से 05:10 AM तक वही, खाता पुजन करे।

व्यापार आरंभ मुहुर्त - प्रातः 06:35 AM से 07:25 AM तक ।
सुबह 10:00 AM से 02: 00 PM तक ।

गोवर्धन पूजा- गौ-बछड़ा एवं बैलों की भक्तिपूर्वक पूजा करनी चाहिए । घर मे बने भोजन का अंश गाय को खिलाना चाहिए। इसके बाद गोवर्धन पूजा (अन्नकुट पूजा) करनी चाहिए।

इसके लिए जो लोग गोवर्धन पर्वत के पास नही है, वह गोबर से या भोज्यान्न से गोवर्धन पर्वत बना ले । अन्न से बने गोवर्धन को ही अन्नकुट कहते है । उसी को क्रमशः पाद्य, अर्ध्य, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवद्य, आचमन, ताम्बूल, दक्षिणा निम्न मंत्र से समर्पित करे।

मंत्र - **" ॐ ह्रीं ह्रीं गोवर्धनाय भद्राय ऐं ऐं ॐ नमः "**

****

6) दि.11.11.2026, बुधवार, यम द्वितीया, भाई दुज - इस दिन चौदह (14) अर्घ्य दान एवं यम पुजन करे ।

इस दिन प्रातः काल चन्द्र दर्शन करना चाहिए। यदि संभव हो तो यमुना स्नान करना चाहिए अन्यथा घर मे ही तेल लगाकर स्नान करना चाहिए। मध्यान्ह काल मे अपने बहन के घर जाकर वस्त्र और द्रव्यादि द्वारा बहन का सम्मान करना चाहिए एवं वही भोजन करना चाहिए।

अतः ऐसी मान्यता है कि जो लोग इस दिन सुहागन बहनोंको वस्त्र, दक्षिणा आदि से संतुष्ट करते है उन्हे एक वर्ष तक कलह, अपकिर्ती और शत्रुभय आदि का सामना नही करना पड़ता। धन, यश, आयु और बल की वृद्धि होती है।

सायंकाल घर मे दीपक (बिजली) जलाकर दीपदान करना चाहिए।

* दीपावली के लघु प्रयोग *

(धन प्राप्ती के साधन)

साधना - 1.

मंत्र - **" ॐ श्रीं श्रियै स्वाहा "**

दीपावली से लेकर कार्तिक पुर्णिमा तक नित्य निम्न यंत्र के सामने एक हजार आठ (1008) बार स्फटिक माला से जप करने से यंत्र सिद्ध होगा। जहाँ यह यंत्र रखा होगा, वहाँ धन का आगमन होगा।

साधना - 2.

दीपावली से आगे ग्यारह (11) दिनों तक निम्न यंत्र के सामने पिली स्फटिक माला से नित्य निम्न मंत्र का एक हजार आठ (1008) बार जप करने से यंत्र सिद्ध होगा।

यंत्र जहाँ भी होगा घर, जमीन, वाहन, आभूषण आदि का लाभ होगा। इस यंत्र को अगली दीपावली तक तिजोरी मे या पॉकेट (पर्स) मे रखे।

मंत्र - **" ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं उत्तिष्ठ श्री करी स्वाहा "**

साधना - 3.

दीपावली के तीन (3) दिनों मे, जमीन को गाय के गोबर से लीपकर, कोई भी रंगोली डालकर बैठ जाये और रात्री के ग्यारह (11) बजे से एक (1) बजे तक निम्न यंत्र के सामने एक हजार आठ (1008) बार मंत्र जपने से साधक को आकस्मिक धन लाभ होगा।

मंत्र - " ॐ वसुदात्र्यै स्वाहा "

साधना - 4.

धनत्रयोदशी के दिन कुबेर यंत्र की संक्षिप्त पुजा कर निम्न मंत्र का जो साधक पच्चीस हजार (25000) जप करता है, उस साधक का धन भण्डार कभी खाली नही होता। उस यंत्र को धनागार मे, तिजोरी मे या अपने पॉकेट, पर्स मे रखे।

मंत्र - **" श्री ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमः "**

साधना - 5.

दीपावली के पाँच (5) दिनों मे निम्न मंत्र का निम्न हैमावति नामक धन यक्षिणी यंत्र के सामने किसी भी माला से पच्चीस हजार (25000) जप करता है, तो एक (1) वर्ष के भीतर ही गरीब, दरिद्र व्यक्ति भी महान् धनवान् व्यक्ति बनता है।

मंत्र - **" ॐ ह्रीं श्रीं हैमवती खरी ह्रीं स्वाहा "**

गृहस्थ अपने घर के पुजन मे आरती संपन्न कर, सभी सामग्री रेशमी वस्त्र मे बांधकर तिजोरी मे रखे। लक्ष्मी माता का विसर्जन नही होता।

श्रद्धा, विश्वास ही फल की कसौटि है।

॥ गुरु कृपा ही केवलम् ॥

गुरोपनिषद

पूर्व वदेयं वदतं सवेतम् सीमानरेशं गुरुर्वे परेशं ,
गुरुर्वे प्रणम्यं सदैवं प्रणम्यं गुरुर्वे गुरुर्वे गुरुर्वे नमामि।।
अचिन्त्य रुपं भवमेक रुपं प्राणोच्छ् वासं संपहितं सदैव ,
आत्मा स्वरुपं अपरेय ध्येयं, गुरुर्वे गुरुर्वे गुरुर्वे नमामि।।
न जानामि पूर्वं न मंत्रं न तंत्रं न योगं न क्षेमं पुरुषं वदेन्यं ,
न जानामि वित्तं पहितं प्रदेयं, गुरुर्वे गुरुर्वे गुरुर्वे नमामि।।
सानाथो न चिन्त्यं ब्रह्म स्वरुपं विष्णो च रुद्रम् सहितं सदैव ,
ज्ञाने अमूर्तं वदतं च रुपं, गुरुर्वे गुरुर्वे गुरुर्वे नमामि।।
अहोभाव रुपं महीशांत रुपं शांत स्वरुपं विष्णो स्वरुपं ,
चैतन्य रुपं परमं मदेवं गुरुर्वे गुरुर्वे गुरुर्वे नमामि।।
अहोरुपं नित्यं भवोच्छाव नित्यं सहेत्यात् नित्यं भवतं सदेयं ,
अपारो परि पूर्ण मेवत्व नित्यं गुरुर्वे गुरुर्वे गुरुर्वे नमामि।।
सनेत्रो सदापूर्ण दैवं च तुल्यं ज्ञानं च पूर्ण सहितं वदामि ,
पूर्ण सदा पूर्ण मदेव रुपं गुरुर्वे गुरुर्वे गुरुर्वे नमामि।।
अहोभाव नित्यं महोभाव नित्यं प्राण स्वरुपं चैतन्य रुपं ,
ब्रह्मा स्वरुपं ब्रह्माण्ड रुपं गुरुर्वे गुरुर्वे गुरुर्वे नमामि।।
अक्षोसतां सूर्य सदैव नित्यं प्राणोच्छ् वासं प्रदतं प्रदैव ,
सचिन्त्य रुपं सवितं सदेयं गुरुर्वे गुरुर्वे गुरुर्वे नमामि।।
कामो च इन्द्र सूर्य सदैव रुपं इंद्रो वतां यक्ष कुबेर पूर्वं ,
ज्ञानोच्छ् वासं ब्रह्मा स्वरुपं गुरुर्वे गुरुर्वे गुरुर्वे नमामि।।
आत्म स्त्वमेवं प्राण स्त्वमेवं चैतन्य रुपं आत्म त्वमेवं ,
देह त्वमेवं सर्वस्व रुपं गुरुर्वे गुरुर्वे गुरुर्वे नमामि।।
महोशांत रुपं अहोभान्त रुपं सदीर्घो वतान्सा वहितं वदेन्यं ,
चिन्त्यं अचिन्त्यं अवितं अहेवम् गुरुर्वे गुरुर्वे गुरुर्वे नमामि।।
प्रणम्यं प्रणम्यं प्रणम्यं सदैव नमामि नमामि नमामि व नित्यं ,
आजान रुपं भवतं स्वरुपं गुरुर्वे गुरुर्वे गुरुर्वे नमामि।।

श्रीसूक्त पाठ

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्त्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मआवह ॥1॥
ता म आवह जातवेदो लक्ष्मीमन पगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥2॥
अश्व पूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मादेवी जुषताम् ॥3॥
कांसोऽस्मितां हिरण्यप्राकारा मार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥4॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टा मुदाराम् ।
तां पद्मिनीमिं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥5॥
आदित्य वर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्व: ।
तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्याऽलक्ष्मी: ॥6॥
उपैतु मां दैवसख: कीर्तिश्च मणिनासह ।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिम् वृद्धिं ददातु मे ॥7॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठाम् लक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिम समृद्धिं च सर्वान् निर्णुद मे गृहात् ॥8॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥9॥
मनस: काममा कूतिं वाच: सत्यमशीमहि ।
पशूनां रुप मन्नस्य मयि श्री: श्रयतां यश: ॥10॥
कर्दमेन प्रजा भूतामयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥11॥
आप: स्त्रजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वसमे गृहे ।
निचदेवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥12॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥13॥

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥14॥
ता म आवह जातवेदो लक्ष्मीमन पगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥15॥
यः शुचिः प्रयतोभूत्वा जुहुयादाज्य मन्वहम् ।
सूक्त पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥16॥

इति श्रीसुक्तम् समाप्तः।

पद्मावती स्तोत्र

श्रीमद् गीर्वाण चक्रस्फूट मुकुट तटि दिव्य माणिक्यमाला ।
ज्योतिर्ज्वाला कराला स्कुरित मुकुरिका दृष्ट पादार विन्दे ॥
व्याघ्रोरुल्का सहस्र स्कुरज्वलन शिखालोलपाशां कुशाङ्ये ।
आं क्रों ह्रीं मन्त्ररुपे क्षपित कलि मले रक्ष मां देवि पद्मे ॥1॥
भित्वा पाताल मूलं चल चलित चलीते व्याल लीला कराले ।
विद्युल्छण्ड प्रचण्ड प्रहरण सहितैः सदभुजै स्तर्जयन्ति॥
दैत्येन्द्रं क्रूर दंष्ट्र किट किट घटिते स्पष्ट भीमाट्टहासे ।
मायाजी मूतमाला कुहरित गगने रक्ष मां देवि पद्मे ॥2॥
कूजत्को दण्ड काण्डो डमर विधुरित क्रूर घोरापसर्ग ।
दिव्यं वज्रातपत्रं प्रगुणमणि रणत्किंकिंणी क्कारम्यं ॥
भासव्दैडूर्य दण्ड मदन विजयिनो विभ्रती पार्श्वभर्तु ।
सादेवो पद्महस्ता विघटयुत महाडामरं मामकोणं ॥3॥
भृंगी काली कराली परिजन सहिते चण्डि चामुण्डि नित्ये ।
क्षां क्षी क्षूं क्षः क्षणार्द्धे क्षतरिपु जिव्हे ह्रीं महामन्त्र रुपे ॥
भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रः भृंग संग भृकुटि पुटतटे त्रासि तोछाम दैत्ये ।
झां झीं झं झः प्रचण्डे स्तुति शतमुखरे रक्ष मां देवि पद्मे ॥4॥
चंचत्कांची कलापे स्तनतट विलुठत्तार हारावली के ।
प्रोपुल्ल-त्पारिजात द्रुम कुसुम महामंजरी पूज्यपादे ॥
द्रां द्रीं क्लीं ब्लुं व्रीं समेते भुवनवसकरी क्षोभिणी द्राविणी त्वं ।

आं ऐं औं पद्महस्ते कुरु कुरु घटने रक्ष मां देवि पद्मे ॥5॥
लीला व्यालोल निलोत्पल दलनयने प्रज्वल द्वाडवाग्निः ।
उद्यज्वाला स्फुलिंग स्फुर दरुण करुदग्र वज्रांग हस्ते ।
ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रौं ह्रः हरति हर हर हूंकार भीमेक नादे ।
पद्मे पद्मसनस्थै व्यय नय दुरितं रक्ष मां देवि पद्मे ॥6॥
कोपं वं जं सं हं सः कुवलय कलितोद्दाम लीला प्रबंधे ।
झां झीं झूं झः पवित्रे शशिकर धवले प्रक्षरक्षीर गौरे ॥
व्याल व्याबद्ध जूटे प्रबल बल महाकाल कुटं हरंति ।
हाS हाS हूँकार नादे कृतकर कमले रक्ष मां देवि पद्मे ॥7॥
प्रतर्वाला क्करस्मि छुरितघन महा सांद्र सिन्दूर धूली ।
संध्या रागा रुणांगी त्रिदश वर वधू वंद्य पादार विन्दे ॥
चंच्चण्ड सिधारा प्रहतरिपु कूले कुण्डलो घृष्ट गण्डे ।
श्रां श्रीं श्रूं श्रः स्मरंति मदगज गमने रक्ष मां देवि पद्मे ॥8॥
विस्तीर्णे पद्मपीठे कमलदल निवासोचिते काम गुप्ते ।
लां तां ग्रीं श्रीं समेते प्रहसित वदने दिव्य हस्ते प्रशस्ते ॥
रक्ते रक्तोत्पलांग प्रतिवहसि सदा वाग्भवं काम बीजं॥
हंसारुढे त्रिनेत्रे भगवति वरदे रक्ष मां देवि पद्मे ॥9॥
षट्कोणे चक्रमध्ये प्रणव वरयुते वाग्भवे काम राजे ।
हंसारुढे सविन्दो विकसित कमले कर्णिकाग्रे निधाय ॥
नित्ये क्लिन्ने मदाद्रै द्रवयसि सततं सां कुसे पाशहस्ते ।
ध्यानात् संक्षोभयन्ति त्रिभुवन वशकृद् रक्ष मां देवि पद्मे ॥10॥
आं क्रों ह्रीं पंचवर्णे लिखित प्रवर षट्चक्रे मध्ये हस् क्लीं ।
क्रौं क्रौं पत्रां तरालै स्वरपरि कलिते वायुना वेष्टितांगी ॥
ह्रीं वेष्ट्यां रक्त पुष्पैर्जपित दल महाक्षोभणी द्राविणी त्वं ।
त्रैलोक्यं चालयति सपदि जनहिते रक्ष मां देवि पद्मे ॥11॥
ब्रह्माणी कालरात्री भगवती वरदे चण्डि चामुण्डि नित्ये ।
मातः गांधारि गौरी धृति मति विजये कीर्ति ह्रीं स्तुत्य पद्मे ॥

संग्रामे शत्रु मध्ये ज्वलद नल जले वेष्टि तेन्यैः सुरास्त्रे:।
क्षां क्षों क्षुं क्षः क्षरगार्धे क्षतरिपु निबहे रक्ष मां देवि पद्मे ॥12॥
खड्गै: कोदण्ड काण्डे मुसल हलहर्रे बाण नाराच चक्रे ।
शक्त्या सल्य त्रिशूलै वर फरगा ससरै मुदगरैर्मुष्टि दण्डे ॥
पासे पाषाराग वृक्षे वर गिर सहितै रिष्ट शस्त्रैर्माल्यै:।
दुष्टानां दारयंति वरभुज ललिते रक्ष मां देवि पद्मे ॥13॥
यस्या देवे नरेंद्रैरमर परिगणै: किन्नरै दानवेन्द्रैः ।
सिद्धैर्नागेन्द्र यक्षर्वर मुकुटतटै धूष्ट पादार विन्देः ।
सौम्ये सौभाग्य लक्ष्मी दलित कलिमले पद्म कल्याणमालै ।
अम्बे काले समाधि प्रकट्य परमं रक्ष मां देवि पद्मे ॥14॥
यूपे-श्चन्दन तंदुले शुभ महा गन्धेश्च मन्त्रालिके ।
नानावर्ण फलैः विचित्र सरसैः दिव्यं मनोहारिभिः ॥
दीपे नैवद्य वस्त्रैरन्तु भवनुकरै भक्तियुक्तं पदत्वां ।
राज्यं हेत्वां ग्रहण भगवति वरदे रक्ष मां देवि पद्मे ॥15॥
मातः पद्मिनी पद्मराग रुचिरे पद्म प्रसूनानने ।
पद्मे पद्म वनस्थिते परिल सत्यद्माक्षि पद्मालये ॥
पद्मामोदिनी पद्मराग रुचिरे पद्म प्रसूनार्चिते ।
पद्मोल्लासिनि पद्मनाभि निलये पद्मालयं पाहि मां ॥16॥
दिव्य स्तोत्रं पवित्रं पटुतर पठितं भक्तिपूर्वं त्रिसंध्यं ।
लक्ष्मी सौभाग्य रुपं दलित कलिमलं मंगलं मंगलानां ॥
पूज्या कल्याणमालां जनयति सततं पार्श्वनाथ प्रसादात ।
देवि पद्मावती नः हसित वदन यस्तुता दासवेन्द्रै ॥17॥
या देवि त्रिपूरा पुरात्रयगता शीघ्रासि शोधप्रदा ।
या देवि समय समस्त भुवने संगीतयते कामदा ॥
तारामान विमर्दिनी भगवति देवि च पद्मावती ।
सास्ता स्वागतस्था मेव नियतां मातेति तुभ्यं नमः ॥18॥

इति श्री पद्मावती स्तोत्र समाप्तः।

धनदा स्तोत्र

॥ श्री शिव उवाच ॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि धनदा स्तोत्रमुत्तमम् ।
यथोक्तं सर्व तन्त्रेषु इदानीं तत् प्रकाशितम् ॥
नमः सर्व स्वरुपेण नमः कल्याण दायिके ।
महा सम्पत्प्रदे देवि धनदायै नमोऽस्तुते ॥
महा भोगप्रदे देवि महाकाम प्रपूरिते ।
सुख मोक्षप्रदे देवि धनदायै नमोऽस्तुते ॥
ब्रह्मरुपे सदानन्दे सदानन्द स्वरुपिणि ।
द्रुतसिद्धिप्रदे देवि धनदायै नमोऽस्तुते ॥
उद्यत्सूर्य प्रकाशाभे उद्यदादित्य मण्डले ।
शिव तत्त्वप्रदे देवि धनदायै नमोऽस्तुते ॥
विष्णुरुपे विश्वमते विश्व पालनकारिणि ।
महासत्व गुणाक्रान्ते धनदायै नमोऽस्तुते ॥
शिवरुपे शिवानन्दे कारणानन्द-विग्रहे ।
विश्व संहाररुपे च धनदायै नमोऽस्तुते ॥
पञ्चतत्त्व स्वरुपे च पञ्चाचार-सदारते ।
साधकाभीष्टदे देवि धनदायै नमोऽस्तुते ॥
इदं स्तोत्रं मया प्रोक्तं साधकाभिष्ट दायकम् ।
यः पठेत् पाठयेद्वापि स लभेत् सकल फलम् ॥
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं स्तोत्रमेतत् समाहितः ।
स सिद्धिं लभते शीघ्रं नात्र कार्या विचारणा ॥
इदं रहस्यं परमं स्तोत्रं परम दुर्लभम् ।
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति ॥
अप्रकाश्य मिदं देवि गोपनीयं परात्परम् ।
प्रपठेन्नात्र सन्देहो धनवान् जायतेऽचिरात् ॥

॥ इति धनदा स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

श्री निखिल चेतना केन्द्र पुलिमामिडी, हैदराबाद (तेलंगाणा)

मोबाईल - 9391029811, 9849069834.